# मंगलेश डबराल

## अपना अंधकार

जब रोशनी हुई
परछाईं दिखी
अपने से बड़ा दिखा
अपना अंधकार ।

**हम जो देखते हैं**
दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन 1995:63